

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



# जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruiti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा  
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ✆ : ०२० - २४२९५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५६ वे ❖ अंक १ ला ❖ सप्टेंबर २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● पर्युषण पर अंतर मन के प्रदूषण को दूर भगाएँ	२३	● ऐसी हुई जब गुरुकृपा : घी-खिचड़ी रो मैल हुवे ८०
● आत्मोत्थान हेतु करें आलोचना	२७	● दीपावली पूजन विधी ९१
● वात्सल्य भाव ही क्षमा धर्म है	३२	● दीपावली पूजन मुहूर्त ९५
● कव्हर तपशील	३३	● राष्ट्र गौरव श्री. वीरचन्द्रजी राघवजी गांधी ९७
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : तप - २	४३	● नफरत V/S प्यार १०५
● नागरिक मी भारत देशाचा	४९	● Art of Talking ११५
● नैतिक जीवन और जैन धर्म	५१	● कडवे प्रवचन ११८
● महावीराचार्य पुरस्कार २०२४	५४	● क्षमा का अमृत ११९
● जैन संस्कृति में सेवा - भाव	५५	● महावीर वाणी १२१
● गांधी ज्वेलर्स (पाबळवाला), पुणे	६७	● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तरी प्रवचन १२३
● छोटी सी बातें	६९	● जीवन में उत्साह का होना ही कार्य के सफलता की कूजी है १२७
● उर्ध्व जीवन की पगडंडी : तप	७०	● चलिए अपनी भुल सुधारिएँ १२८
● बुद्धिनिधात अभयकुमार	७१	● हास्य जागृती १२९
● श्री महावीरजी तीर्थ, राजस्थान	७७	● मृत्युपत्र लिहिताना १३९
● जीवन बोध : बुद्धिमान मंत्री	७८	

● अभी धर्म को धारणा करना बाकी है	१४२	● जैनम एवम् जिविका जैन, दुबई	१७२
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	१४३	● आनंदऋषिजी हॉस्पिटल, अहमदनगर	१७३
● सुविचार	१४४	● कॅमल साबुदाणा ब्रँड, अहमदनगर	१७५
● महाराष्ट्र शासन : भगवान महावीर		● श्री. सुनीलजी जैन-खाबिया, मुंबई	१७६
२५५० वा निर्वाण कल्याणक महोत्सव	१४५	● श्री. प्रकाशजी धारिवाल -	
● अजैन मित्राची क्षमाप्रणता	१४७	एसएनजेबी संस्था सहयोग	१७७
● Password - पासवर्ड	१४९	● गुरु आनंद पुरस्कार, पुणे	१७९
● "स्वाध्याय" एक आत्मानुभूति	१५०	● C.A. मे. पी.एस. बाफना आणि कंपनी	१८१
● जागृत विचार	१५१	● श्री. राजेंद्रजी बांठीया, पुणे	१८३
● शैक्षणिक संस्था NIRF 2024 : रँकिंग	१५२	● जय आनंद ग्रुप, पुणे	१८३
● गुरुवाणी	१५३	● श्री उवसगगहंर स्तोत्र सामुहिक पठण, पुणे	१८५
● सामायिक और स्वास्थ्य	१५५	● तनाव से बचे	१८४
● बुजुर्ग नहीं, भाग्यशाली कहें	१६३	● प्रो. राजाराम जैन - पद्मश्री	१८७
● सवाल में ही जवाब	१६५	● मध्यस्थी यशस्वी - व्यापारांचा संप मागे	१८९
● २१ सितंबर - विश्व शांति दिन	१६७	● सुरक्षा : छोटे रास्ते जीवन को	
● आहार पानी के लिए श्रावक का दायित्व	१६८	छोटा कर देते है	१९३
● सकारात्मकता की शक्ती	१६९	● विविध धार्मिक व सामाजिक बातम्या	
● महासतीजी श्री मंजुश्रीजी म.सा.	१७१		

## जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक	पंचवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१३५०	२२००
रजिस्टर पोस्टाने	८००	२२५०	३७००



या अंकाची किंमत ५० रुपये.

Google Pay - Mob. : 9822086997

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

## पर्युषण पर अंतर मन के, प्रदूषण को दूर भगाएँ

लेखक : राष्ट्रसंत श्री गणेशमुनि शास्त्री

आज से महापर्व पर्युषण का मंगल प्रारम्भ होने जा रहा है। इस महापर्व के आगमन के साथ ही मैं देख रहा हूँ कि जन-जन के मन में अपूर्व उल्हास उमड़ आया है। छोटे-छोटे बच्चों के मन में भी आज धर्म-साधना में संलग्न होने की एक होड़ सी दिखाई दे रही है। हर पर्व का उसका अपना एक इतिहास है। लौकिक पर्वों में खाने-पीने की, घूमने-फिरने की, नाचने-कूदने की, ऐशोआराम की दृष्टि होती है, पर इस लोकोत्तर पर्व में ऐसा कुछ भी नहीं है। लोकोत्तर पर्व का सम्बन्ध आध्यात्मिकता से है। आत्मा से है। पर्युषण पर्व भौतिकता को पुष्ट करने वाला पर्व नहीं है। यह पर्व आत्म-जागरण का पर्व है। अपने आप पर अनुशासन का पर्व है। विभाव से स्वभाव की ओर बढ़ने का पर्व है। अपने आपको बाहर से समेटकर भीतर से संलग्न करने का पर्व है। पर्युषण पर्व समग्र कषायों से विरति का संकल्प लेते हुए क्षमा-विनय-सरलता, समता, संतोष और सद्भाव-सौहार्द की अभिवृद्धि करने का पर्व है। सर्वथा विशुद्ध, इस आध्यात्मिक पर्व में आत्म-निरीक्षण, आत्म-चिंतन, आत्म-रमण और स्वभाव-रमण की विशुद्ध क्रियाएँ निहित हैं। जीवन के प्रति विशिष्ट चिंतन जगाने वाले इस पर्व की आराधना पूर्ण सजगता के साथ की जानी चाहिए। पर्युषण की महत्ता के सम्बन्ध में मैंने एक चतुष्पदी लिखी है-

पर्युषण पर्व आत्मा को निर्मल बनाने आता है।

पर्युषण पर्व क्षमा के सुमन खिलाने आता है।

वीतराग प्रभु की आराधना-साधना के साथ-साथ

पर्युषण पर्व प्रसुप्त आत्मा को जगाने आता है ॥

✽ पर्युषण और उसका अर्थ

यहाँ हमें यह समझ लेना नितांत आवश्यक है कि पर्युषण का अर्थ क्या है? पर्युषण किसे कहते हैं? पर्युषण शब्द की व्याख्या करते हुए विद्वान विचारकों ने

कहा है- 'परि' उपसर्ग 'उष' धातु और 'अन्' प्रत्यय लगकर पर्युषण शब्द बना है। 'उष' धातु का प्रयोग जलाने के अर्थ में हुआ है। प्रश्न उपस्थिति होता है कि क्या जलाया जाए? उत्तर स्पष्ट है आत्मा के चारों ओर प्रमाद आदि के कारण कर्मों और कषायों का जो कचरा एकत्रित हो गया है, उस कचरे को जो आमूलचूल रूप से जलाकर नष्ट कर दे, उस प्रक्रिया का नाम पर्युषण है। इसे हम इस प्रकार से कह सकते हैं-

परि समंतात् ओषति दहति,

समूलं कर्म जालं च तत् पर्युषणम् ।

पर्युषण के सम्बन्ध में हमारे आगम ग्रन्थों में कई शब्द मिलते हैं। उनमें से 'पञ्जुसणा' और 'पञ्जुसमणा' शब्द बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। 'पञ्जुसणा' शब्द का अर्थ पर्युपासना है। पर्युपासना का अभिप्राय आत्मा के समीप आना, आत्मा के सम्मुख रहना, या आत्मा के द्वारा आत्मा का, स्वयं के द्वारा स्वयं का ध्यान लगाना है। अपना ध्यान और ज्ञान करना सचमुच बहुत बड़ी बात है। आज सारा संकट इस बात का है कि आदमी दूसरों का ध्यान करने में निष्णात है, पर उसे अपना ध्यान करने का अवकाश नहीं है। जब तक व्यक्ति स्वयं से नहीं जुड़ता, तब तक उसे जीवन में शांति की अनुभूति नहीं हो सकती। कहा भी है-

आप में जब तक कि कोई, आपको पाता नहीं।

मोक्ष की मंजिल तलक, हरगिज कदम जाता नहीं ॥

आज के आदमी को दुनिया भर का ज्ञान है। दुनिया भर से उसका परिचय है पर स्वयं से वह बेखबर है। जब तक वह स्वयं से संलग्न नहीं बनेगा, उसके जीवन की समस्याएँ घटने के बजाय और अधिक बढ़ती चली जाएँगी। पर्युषण पर्व यही संदेश लेकर समुपस्थित हुआ है कि हम अपने आपसे संपर्क स्थापित करें। अपने आपको देखें, परखें एवं जीवन को

जीवन के ढंग से जीने का अभ्यास करें। दूसरा शब्द है- 'पञ्जसमणा' इसका अर्थ पर्युपशमना है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिकांश समस्याओं के मूल में आंतरिक विकारों एवं कषायजन्य विषमताओं का प्राधान्य है। जब तक इनका शमन नहीं होता, जीवन के चमन में सुखों के फूल नहीं खिल सकते। पर्युषण का यह निर्देश है कि हम समता की अमृत वृष्टि के द्वारा इन ज्वालाओं को शांत करने का पुरुषार्थ करें।

### ✽ पर्युषण के आठ दिन

पर्युषण कब से प्रारम्भ हुआ? इसके आठ दिन ही क्यों हैं? इसके मूल में क्या इतिहास है? ऐसे कई प्रश्न हैं जो जिज्ञासुजनों के मन में प्रायः उभरते रहते हैं। मैं सोचता हूँ, इन प्रश्नों पर यदि हम विचार-चर्चा करने के लिए बैठें तो एक विशालकाय स्वतन्त्र ग्रन्थ का निर्माण हो सकता है, किन्तु इस सम्बन्ध में मेरी अपनी मान्यता है कि अपने समय को इन प्रश्नों में लगाने की अपेक्षा अच्छा यह है कि आत्मोत्थान के लिए पर्व के रूप में सम्प्राप्त स्वर्णिम अवसर का सदुपयोग करना चाहिए।

प्रस्तुत संदर्भ में अभी मैं संक्षिप्त में केवल इतना ही अभिव्यक्त करना चाहूँगा कि पर्युषण एक दिवसीय हो, भले ही आठ दिवसीय हो, इसका जो उद्देश्य है, वह उदात्त है और इसी उदात्त उद्देश्य को संपुष्ट करने का दृष्टिकोण हम सभी का रहना चाहिए। विषयता मूलक साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से भरे उपक्रमों का कोई महत्त्व नहीं है। समता का विकास ही हमारा ध्येय होना चाहिए। समता के बिना जीवन का प्रत्येक क्षेत्र अधूरा है।

इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि हमने पर्युषण जैसे महान पर्व को भी राग-द्वेष, विषमता का और अपने-अपने पंथों और परम्पराओं को मजबूत बनाने का माध्यम बना लिया है। मैंने आगमों का जो अध्ययन, अनुशीलन किया और जो कुछ समझ पाया, उस आधार पर यह स्पष्ट है कि पर्युषण के साथ किसी भी प्रकार की विषमता का सम्बन्ध नहीं है। इसके मूल

में आध्यात्मिक अभ्युदय का ही लक्ष्य है। पर्युषण में हमें पूरी जागरूकता के साथ साधना में स्वयं की प्रयुक्ति करनी चाहिए। कषायों की उपशांतता के बगैर कितनी ही बाह्यक्रियाओं की सम्पन्नता क्यों न कर ली जाए, इनका कोई महत्त्व नहीं है।

एक दिवसीय या आठ दिवसीय परम्परा के सम्बन्ध में थोड़ा बहुत ज्ञान श्रोताओं को हो जाए, इस दृष्टि से यह स्पष्ट करना मुझे आवश्यक लग रहा है कि एक दिवसीय और आठ दिवसीय परम्परा प्रथम और अन्तिम तीर्थकर के शासनकाल में ही विहित है। मध्यकाल में बावीस तीर्थकरों के शासनकाल में पर्युषण काल जैसा कोई विधान नहीं है। उनके शासनकाल में दृष्टिकोण यह रहा है कि जब भी चारित्र आदि में कोई स्खलना-दोष आदि लगे तो बिना किसी विलम्ब के तत्काल उसी समय क्षमापना, प्रतिक्रमण आदि से जुड़कर उसका शुद्धिकरण कर लिया जाए। वर्तमान में जो आठ दिवसीय पर्युषण की परम्परा का प्रचलन है, इसके मूल में जीवाभिगम आदि प्राचीन आगम ग्रंथों का उल्लेख मुख्य है। जो कुछ भी हो, इन उपक्रमों का महत्त्व असंदिग्ध है। आध्यात्मिक साधना से जुड़ने पर शान्ति मिलती ही है।

इन आठ दिनों में प्रचलित परम्परा के अनुसार प्रातः प्रवचन सभा में अन्तकृत दशांग सूत्र में उन ९० साधक-साधिकाओं के तपोमय जीवन-वृत्तों का समावेश है, जिन्होंने सुकुमारता का परित्याग करके संयम साधना के द्वारा कर्मों को जर्जरित किया एवं मुक्ति का वरण किया। दोपहर में कल्पसूत्र का वाचन और श्रवण किया जाता है। सायंकाल प्रतिक्रमण, ध्यान, तत्त्वचर्चा आदि क्रियाओं को सम्पन्न किया जाता है। पूरी तरह से वातावरण धर्ममय बन जाता है।

### ✽ अन्तर-बाह्य शुद्धिकरण

इन दिनों में अधिकाधिक रूप से व्यक्ति सावद्य प्रवृत्तियों से स्वयं को बचाता है। दान, शील, तप और भाव की आराधना प्रमुख रूप से सम्पन्न करना साधक

का ध्येय रहता है। संवर, सामायिक, स्वाध्याय, मौन, तप, जप आदि की ओर उन्मुखता पर्युषण के आठ दिनों में सतत रहती है। वर्षभर में प्रमाद आदि के कारण मन, वचन और काया के योग द्वारा जो भी अकरणीय हुआ हो, इन आठ दिनों में उन पर चिन्तन-मनन करके साधक आत्म साक्षी और गुरु साक्षी से प्रायश्चित्त करके शुद्धिकरण करता है एवं भविष्य में पुनः उसकी पुनरावृत्ति न हो, इस प्रकार का संकल्प ग्रहण करता है।

पर्युषण-पर्व के सम्बन्ध में जैसा कि मैंने प्रारम्भ में कहा था, उसे पुनः दोहरा रहा हूँ कि यह महापर्व अध्यात्म साधना में संलग्न करने वाला महापर्व है। पेट, पेटी और परिवार की फिक्र में रात-दिन जीवन का समय बीत ही रहा है। हमें थोड़ा इस जीवन को अध्यात्म से समृद्ध बनाने के लिए भी सचेष्ट होना चाहिए। भौतिक दृष्टि से जीवन में कितने ही समृद्ध बन जाइये, आपकी भौतिक समृद्धि आपको थोड़ा-सा भी सुख नहीं दे सकेगी, यदि आप अध्यात्म से विपन्न हैं। अन्तकृतदशांग सूत्र में वर्णित महान साधकों के जीवन आप सुन ही रहे हैं। उनके जीवन में सच्चे सुख और शांति का विस्तार तभी हुआ था, जब उन्होंने अध्यात्म के पथ पर स्वयं को अग्रसर किया। हम इन प्रसंगों को सुनकर ही न रह जायें, अपितु उनका अनुगमन करके जीवन को ज्ञान और क्रिया की दृष्टि से परिपूर्णता सौंपे।

आज के वैज्ञानिक युग में यह ठीक है कि भौतिक दृष्टि से आदमी ने प्रचुर रूप से गति-प्रगति की है, पर उसके जीवन में फिर भी एक गहन रिक्तता है। इस रिक्तता का कारण स्पष्ट है कि जीवन में धर्म और अध्यात्म का अभाव है। धर्म और अध्यात्म का अभाव व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से रूग्ण बना देता है। इस रूग्णता से हमें मुक्त बनना है तथा अंतर-बाह्य दृष्टि से स्वस्थता से जुड़कर हमें पूर्ण निष्ठा के साथ पर्युषण पर्व की आराधना करनी है।

इन आठ दिनों में हमें अपना और केवल अपना ही सर्वेक्षण करना है। दूसरों को देखकर, समझकर,

आज तक कुछ भी तो नहीं मिला। हम अपने आपको देखने का प्रयास करें। हमारे मन के आँगन में क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष आदि का जो भी कचरा एकत्रित हो गया हो, उस कचरे को विवेक की बुहारी लेकर तुरन्त साफ करें। यह कचरा यदि मन के आँगन में पड़ा रहता है तो सड़ांध पैदा करेगा और इस सड़ांध से हम निरन्तर अस्वस्थ बनते चले जाएँगे। इसलिए इन आठ दिनों में हमें पूरे सालभर का हिसाब-किताब ठीक करना है। कुशल व्यवसायी वह होता है जो लाभ और हानि की ठीक तरह से समीक्षा करता है, हानि के पहलुओं पर विराम लगाता है एवं जिनसे लाभ का मार्ग प्रशस्त होता है, उन हेतुओं को मजबूत बनाता है। आप में अद्भुत मनन क्षमता विद्यमान है। अपनी क्षमता का उपयोग समुचित दिशा में करना जागरूकता है।

जीवन जागरूकता से उत्कृष्टता का वरण करता है। हम अपने मन में अधिकाधिक पवित्र भावों का समावेश करें। वाणी के द्वारा किसी को कटुवचन न कहें। किसी की निन्दा और आलोचना में रूचि रस न लें। सेवा आदि के किसी भी महत्वपूर्ण अवसर को गँवाने की भूल न करें। धन का अर्जन-ही-अर्जन न करते रहें, अपितु सत्प्रवृत्तियों को संचालित करने के लिए उसका विसर्जन करना भी सीखें, दूसरों के न्यायाधीश कभी भी न बनें। ऐसी कोई भी अनावश्यक बात न सुनें, जिसे सुनकर भीतर में विषमता के भावों का जन्म हो।

कुल मिलाकर कहने का अभिप्राय यही है कि पर्वराज पर्युषण आंतरिक जागरूकता का पर्व है। जितनी जागरूकता रखी जाएगी हमारा अपना जीवन उतना ही गरिमामय बनेगा। पर्युषण पर्व का आगमन हरएक श्रावक-श्राविकाओं के लिए वरदान रूप सिद्ध हो, इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ एक बार पुनः इन पंक्तियों के साथ मैं सभी को आह्वान करना चाहता हूँ-

**पर्युषण पर अन्तर मन के प्रदूषण को दूर भगाएँ।  
विकृतियों का करें विसर्जन, सद्गुणों के सुमन खिलाएँ ॥●**

## आत्मोत्थान हेतु करें आलोचना

प्रवचनकार : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा.

सिद्ध स्वरूपी सिद्ध भगवान, पाप-प्रकृतियों को क्षय करने वाले अरिहन्त भगवान तथा सिद्धि की राह पर चलते हुए समिति-गुप्ति की साधना करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।  
बन्धुओं!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में आत्म-सिद्धि की चर्चा चल रही है। हरएक प्राणी सिद्धि चाहता है। जो जिस बात को अच्छा मानता है, उसकी प्राप्ति का हर संभव प्रयास करता है। संसार में कुछ ऐसे मूढ़ मति हैं जो चाहते हुए भी कुछ कर नहीं पाते। ज्ञान अच्छा है। पढ़ना अच्छा है। शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो, इस लक्ष्य से ग्राम नगरों में शिक्षण सप्ताह चलाया जाता है। नारा क्या है? चलो, स्कूल की ओर। क्यों? कारण क्या? नारे लगाने का कारण है- जो परिस्थितियों में उलझे लोग हैं, पढ़ना अच्छा मानते हुए भी परिस्थितियों के कारण पढ़ नहीं पाते उन्हें स्कूल में ले जाना। पढ़ने की उम्र वाले न जानें कितने बच्चे पोटली लेकर गली-गली कचरा बीनते हैं। कुछ कारखानों में, मिलों में, व्यापारिक प्रतिष्ठानों में मजदूरी करते हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो काम करते हैं और पढ़ाई भी करते हैं। पढ़ना अच्छा है, पढ़ना चाहिए फिर भी वे पढ़ नहीं पाते। आज बच्चों को पढ़ाने के लिए सरकार की ओर से, सामाजिक संस्थाओं की ओर से, कई कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इसके अन्तर्गत 'स्कूल चलो' अभियान का सप्ताह मनाया जाता है।

पढ़ना अच्छा है, ऐसे ही सफाई भी अच्छी है। अच्छी होते हुए भी सब जगह सफाई नहीं हो पाती, इसलिए सफाई सप्ताह चलाया जाता है। गाँवों में, शहरों में, महानगरों में सफाई सप्ताह मनाया जाता है। बड़े-

बड़े नेता, अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, गाँव-नगर के प्रमुख प्रमुख लोग आगे आकर सफाई अभियान का श्रीगणेश करते हैं। प्रधानमंत्री, मंत्रीगण, पार्टियों के मुखिया कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिससे सामान्य जन कार्यक्रमों की क्रियान्विति में जुड़ें और सफाई का काम आगे बढ़े। आजीविका के लिए भी लोग अपना नाम इन कार्यों को करने में लिखवाते हैं, काम पर आते हैं किन्तु काम कितना करते हैं? कुछ तो ऐसे भी हैं जो केवल मात्र हस्ताक्षर करके दिनभर मौज-मस्ती करते हैं। वे जानते हैं कि हमारी ड्यूटी है काम करने की, पर साइन करके ड्यूटी की इतिश्री कर लेते हैं।

अभी एक शब्द पढ़ा- GOD गॉड यानी गो ऑन ड्यूटी (Go On Duty) जो कर्तव्य का पालन करता है, ड्यूटी करता है, ईमानदारी से काम करता है, वह गॉड है। गॉड यानी भगवान।

जो काम को भगवान माने वह काम करने में कोताही नहीं करेगा। पूरी निष्ठा से और समर्पित भाव से काम करेगा। काम की प्रेरणा देने के लिए भी अभियान चलाए जाते हैं। काम करने वाला अनुशासन में रहे इसके लिए कभी अनुशासन सप्ताह का आयोजन किया जाता है। ये सब क्यों? इसके पीछे कारण हैं। बातों में, खेल-खेलने में, हँसी-मजाक में न जाने कितना समय व्यर्थ चला जाता है किन्तु उन्हें यदि कहा जाय कि तुम भगवान् का नाम लो, कुछ नहीं तो एक माला ही जप लो, सामायिक कर लो, भगवान की वाणी सुन लो तो वे तैयार नहीं होते। कहने के लिए कहते हैं- भगवान का नाम लेना अच्छा है, भगवान की वाणी सुननी चाहिए परन्तु कहने के बावजूद समय का भोग देना भूल

जाते हैं। आपने सुना होगा- भगवत वाणी श्रवण कराने की दृष्टि से भागवत सप्ताह मनाया जाता है। क्यों? आयोजन करने वाले जानते हैं कि भगवान की वाणी तन-मन को पवित्र करने वाली है। भागवत सप्ताह के बहाने सामान्य जन आएँगे, सुनेंगे और सुनकर कुछ जीवन में अंगीकार करेंगे।

कल संवत्सरी महापर्व हैं। इस महापर्व की सम्यक् आराधना के लिए आप सप्ताह भर से तैयारी कर रहे हैं। भगवान की वाणी सुनने वाले सदैया न सही, चातुर्मासिया न सही, भदैया न सही, संवत्सरिया ही सही कुछ तो स्मरण करे, श्रवण करे, साधनरत हों और पाप से बचे रहने की कोशिश करें। कुछ लोग रोज नहीं कर पाते, वे चातुर्मास लगने के साथ चार माह के लिए कुछ नियम करते हैं। चार माह रात्रि भोजन का त्याग करते हैं, जमीकन्द की मर्यादा करते हैं, ब्रह्मचर्य व्रत के प्रत्याख्यान करते हैं। नियम लेने वाले नियम लेकर पालना करते हैं। पर सब चौमासिये नहीं होते। भदैया यानी भाद्रपद में करने वाले भी कुछ-न-कुछ त्याग-तप करते हैं। भदैया भी सब नहीं होते, इसलिए पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के इन आठ दिनों में आकर न केवल व्याख्यान सुनते हैं पर आठ दिन कच्चा पानी नहीं पीऊँगा, हरी सब्जी नहीं खाऊँगा, चौविहार करूँगा, कुशील का सेवन नहीं करूँगा, इस तरह के नियम करते हैं। कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो पर्व के आठ दिनों में साधना-आराधना नहीं कर पाते, वे संवत्सरी के दिन लाइसेंस रिन्यू करवाने जरूर आते हैं। बाकी दिनों में करें, न भी करें पर संवत्सरी के दिन उपवास करते हैं, व्याख्यान सुनते हैं, सामायिक-साधना और प्रतिक्रमण जरूर करते हैं। अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए बच्चे से बूढ़े सभी तत्पर रहते हैं।

कल संवत्सरी महापर्व है। आप जानते हैं, मानते हैं, कहते हैं कि साधुपना अच्छा है, फिर भी महाव्रत अंगीकार नहीं कर पाते। आज का दिन आत्मशुद्धि का

है, कल दिल की दीवाली होगी। जो बीत गया, सो बीत गया, अब तक जिन्होंने कुछ भी नहीं किया, अब पीछे नहीं रहना है। आपको, हमको, सबको पापों की आलोचना करनी है। आलोचना आवश्यक है। प्रायश्चित्त करना, शुद्धि करना जरूरी है। पाप की शुद्धि न हो तो फिर बड़े से बड़ा तप करना भी सार्थक नहीं होगा। लोग मासखमण करते हैं, यह अच्छा है, किन्तु तप के पहले शुद्धिकरण का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

प्रायश्चित्त में भगवान् महावीर के शासन में छःमासी प्रायश्चित्त होता है। तप का किसी को प्रायश्चित्त दिया जाएगा तो अधिक से अधिक छः मासी तप हो सकता है। दीक्षा छेद भी छः मासी ही दिया जाएगा। पाप का प्रायश्चित्त छः महीने से ज्यादा नहीं होता। मैं, मेरी नहीं, आपकी नहीं, भगवान महावीर की बात कहता हूँ। उनके जीव ने पाप करके प्रायश्चित्त नहीं किया तब तक उनके कर्म अवशेष रहे। पूर्व में भगवान के जीव ने किसी के कान में शीशा डाला, तड़फा-तड़फा कर मारने के पीछे हेतु था कि उसे देखकर दूसरे मेरी आज्ञा टालने का साहस न करे। मेरी आज्ञा नहीं मानी, यह भूल कैसे हो गई? मन में खेद नहीं, पश्चाताप का भाव नहीं, यह मर रहा है, मर जाने दो। कल कोई मेरी आज्ञा की अवहेलना नहीं करेगा। परन्तु महावीर ने इस भव में इसको समता से सहन किया ताकि अवशेष कर्म समाप्त हों।

आज क्या स्थिति है? अमुक ने मेरे को ऐसा कहा, मैंने वापस ऐसा सुनाया कि वह जिन्दगी भर याद रखेगा। गलत काम जो भी करे उसे दण्ड मिलेगा, यह सोचकर यदि भूल का परिमार्जन नहीं किया जाता अथवा पाप का प्रायश्चित्त नहीं किया जाता है, तब तक कर्म कट जायेंगे ऐसा मानना भूल है।

राजा नंदन के भव में भगवान महावीर के जीव ने कितने मासखमण किए थे? उस जीव ने ग्यारह लाख से ऊपर मासखमण किए। कोई एक लाख वर्ष की उम्र में

मासखमण करते-करते पारणा करे तो जीवन में ग्यारह लाख साठ हजार मासखमण होते हैं। इतना करने के पश्चात भी उनका पाप नहीं धुला। हम सब आलोचना करें। मैं अगर संत हूँ तो मैं अपनी आलोचना करूँ। मैंने व्याख्यान दिया, कहीं लोगों को प्रसन्न करने के लिए तो व्याख्यान नहीं किया? व्याख्यान मात्र इन्द्रियों के पोषण के लिए किया या पाप से हटकर धर्म की ओर बढ़ाने के लिए किया? इस दृष्टि से व्याख्याता अपनी आलोचना करें।

आप श्रावक हैं, गृहस्थी हैं आप अपना चिन्तन करें कि मैंने कहीं थोड़ा देकर अधिक तो नहीं बताया है। आज कई हैं जो देते कम हैं दिखाते ज्यादा हैं। वे अपने-आपको दानवीर समझें, भामाशाह अथवा झगड़शाह मान लें, तो कहना होगा दान अहंकार की पूर्ति के लिए दिया है। आज नाम के लिए देते हैं, यशकीर्ति के लिए देते हैं, प्रशंसा पाने के लिए दान करते हैं, अहंपूर्ति के लिए देते हैं। कभी उनके मुँह से दूसरों के लिए भी निकल जाता है कि-“ए बापड़ा काँई देवे, है काँई जो म्हारी बराबरी करे।” ऐसा कहने वाले और सोच रखने वाले, कर्मबंधन करते हैं। देने वाले देने समय सोचे कि मैं दीन-दुःखियों के दुःख दूर करने में सहयोगी बनूँ, जो कष्ट पा रहे हैं उनके कष्टों को दूर करने का प्रयास करूँ, जिसका लक्ष्य किसी की वेदना कम करने का है, वह छुपकर देगा, दिखाकर देने की उसकी भावना नहीं होगी।

सेवा करने वाला है तो वह सेवा करे। शास्त्र कहता है-वैयावृत्य करने वाला तीर्थकर नाम कर्म गोत्र का उपार्जन करता है। सेवा करने वाला सेवा की भावना से सेवा करे, अन्तर्मन से सेवा करे। सेवा के लिए नन्दीषेण जी महाराज का नाम लिया जाता है। एक महाराज बीमार हो गये। सेवाभावी नन्दीषेण जी महाराज तपस्वी हैं, पारणक लाया हुआ है, लेकिन बीमार मुनि की बात सुनी तो पारणा एक तरफ रखा और महाराज

की सेवा में पहुँच गए। महाराज की चलने की स्थिति नहीं थी। महाराज को उपचार के लिए ले जाना आवश्यक था और बीमारी में वे चल पाने में सक्षम नहीं थे अतः सेवाभावी नन्दीषेण मुनि उनको उठाकर चलते हैं। बीमार महाराज कंधे पर बैठ कर रवाना तो हो गए किन्तु कंधे पर बैठे-बैठे उन्होंने गन्दगी कर दी। नन्दीषेणजी का शरीर अशुचि से भर गया। सेवाभावी मुनिश्री को ग्लानि नहीं हुई, लेकिन मन ही मन यह विचार आया कि मैंने यहाँ पहुँचने में देर कर दी। मैं कुछ जल्दी करता तो अच्छा रहता। सेवा करने वाले पर गन्दगी करना तो दूर की बात कोई थूक दे तो उसे कैसा लगेगा? थूके भी नहीं, पर मन के विपरीत कुछ कह दे तो सुनना तक पसंद नहीं करेगा। सेवा करने वाला अपना सुख और सुविधा छोड़कर सामने वाले के दुःख को मिटाता है और वह भी अग्लान भाव से तब कहीं जाकर सेवा होती है।

दान हो, व्याख्याता हो, सेवा हो ये सभी काम अच्छे हैं। आप जो कर सकते हैं कीजिए। अपने कर्मों के दलों को काटिये। आप अपने दोषों की शुद्धि हेतु आलोचना करें। इस साल तक की ही नहीं, जब तक के दोष याद आएँ उन सब दोषों की आलोचना करें, प्रायश्चित्त करें, शुद्धि करें। हिंसा में, झूठ में, चोरी में, कुशील में, पाप-त्याग में कहाँ-कहाँ अतिक्रमण हुआ, उन पर सोच-विचार करके पश्चाताप करें। प्रायश्चित्त करके संकल्प करें कि अब फिर से वैसे पाप न हों।

प्रतिक्रमण में एक-एक पाठ तीन बार बोला जाता है। निन्नाणु अतिचार पहले ध्यान में बोले गए फिर प्रकट में और उसके बाद अणुव्रत में। आप आलोचना करें, प्रतिक्रमण करें और शुद्धिकरण करें। मैं संत हूँ, मैं अपनी आलोचना करूँ, आप श्रावक हैं तो आप अपनी आलोचना करें। एक-एक व्रत के पाँच-पाँच अतिचार हैं। रोष वश गाढ़ा बंधन बांधा हो, गाढ़ा घाव घाला हो,



अवयव का छेद किया हो, अधिक भार भरा हो, भक्त-पाणी का विच्छेद किया हो, ये अतिचार आप बोलते हैं, बोलने चाहिए किन्तु कार्य निष्पादन करते समय भी पूरा उपयोग रखना चाहिए। उपयोग में धर्म है।

आदमी आवेश में क्या-क्या कर जाता है, उसे ध्यान नहीं रहता। किसी को थप्पड़ मार देना, मुक्का चला देना, अस्त्र-शस्त्र से वार कर देना, आवेश की निशानी है। आवेश में दूसरों पर वार करता है तो कभी-कभी आत्महत्या तक भी कर बैठता है। पति-पत्नी के बीच झगड़ा हुआ। पति का दुःख देना सहन नहीं हो रहा था, अतः आवेश में आकर पत्नी ने कोर्ट केस कर दिया। न्यायालय ने घर वाले सदस्यों को जेल की सजा दे दी। ऐसे किस्से सुनते हैं, देखते हैं। पति ने पत्नी को जला दिया इसके पीछे आवेग है, आवेश है।

आज मायाचार बहुत बढ़ गया है। धोखा करना, कपट करना, दुर्व्यवहार करना, कोर्ट-कचहरी चढ़ जाना सामान्य बात हो गई है। हमसे जो भी भूलें हुई, अपराध हुआ, त्रुटियाँ रही, आज हम एक-एक पाप की सच्चे मन से आलोचना करें। आज आलोचना करने का दिन है। हर व्यक्ति अपनी आलोचना करें। आप चाहे ब्रती हैं या अव्रती, सबको अपनी-अपनी आलोचना करनी है। हर व्यक्ति को अपना चिन्तन करना है। आप चाहे व्यापारी हैं तो विचार करें कि कहीं मैंने माल में मिलावट तो नहीं की, खोटा माप-तौल तो नहीं किया। धंधे वाले अपना सोचें, नौकरी वाले अपना चिन्तन करें कि मैंने किसी से घूस तो नहीं ली, कहीं भ्रष्टाचार तो नहीं किया, किसी को हैरान-परेशान तो नहीं किया। आप चाहे अधिकारी हैं या कर्मचारी सबको सोचना है, विचार करना है और आलोचना करनी है।

आप चाहे ब्रती हैं या नहीं, परन्तु हर इंसान को हिंसा, झूठ, चोरी से बचे रहना है। पाप, सामाजिक दृष्टि से, राजकीय दृष्टि से और आध्यात्मिक दृष्टि से हेय है,

अपराध है। आप चाहे जिस माध्यम से अपनी आजीविका चला रहे हैं, अपना शोधन करेंगे और भविष्य में नियम के परिपालन में सजग रहेंगे तो पाप-प्रवृत्ति से बचे रह सकेंगे।

आप स्वतः अपनी आलोचना करें। किसी के कहने पर आलोचना करेंगे तो हो सकता है आपको गुस्सा आ जाय। किसी का कहा हुआ कभी नागवार लगे, कभी न भी लगे परन्तु स्वयं की आलोचना करेंगे तो पाप प्रवृत्ति स्वतः घटती जाएगी। आप अगर पिता हैं तो सोचे कि मैंने पिता का कर्तव्य निभाया या नहीं? आज एक व्यक्ति गली-मोहल्ला गाँव सँभालता है पर अपने बच्चों को सँभालने का उसे समय नहीं। आप में से कुछ संघ या समाज के पदाधिकारी हैं तो क्या आप अपना दायित्व भली-भाँति निभा रहे हैं? आप चाहे पिता हैं, परिवार के मुखिया हैं, संघ-समाज के अधिकारी हैं, सामाजिक-धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से संबंधित हैं, कारखाने के मालिक हैं, आप अपना चिन्तन करें। साथ-ही-साथ घर-परिवार के बच्चों को संस्कार दे रहे हैं या नहीं, इसका भी अवश्य विचार करें।

आज सांस्कृतिक स्तर पर बहुत बिगाड़ हो रहा है। आपको तो फुर्सत नहीं है संस्कार देने की और कभी किसी बच्चे को कहना भी पड़े तो बच्चा सुनना नहीं चाहता है। टी.वी. के सीरियल देख-देखकर बच्चों में सुनने की शक्ति रही नहीं। कभी किसी ने कह दिया तो बच्चे जवाब देने में संकोच नहीं करते। पिताजी को यह बोल जाते हैं म्हाने उपदेश मत झाड़ो। आज इस तरह का वातावरण क्यों हो रहा है? आप विचार करें।

एक माँ डॉक्टर है। उसके पास पचासों मरीज आते हैं, सबका उपचार करती है, लेकिन घर का बच्चा बीमार है तो सँभालने का उसके पास समय नहीं है। यह घटना मात्र नहीं है, इसे आप कहानी भी नहीं कहें। ये सच्ची बातें हैं, जिनपर ध्यान देने की जरूरत है।

संवत्सरी महापर्व साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के लिए ही नहीं, हर व्यक्ति के लिए है। आप सब अपना-अपना चिन्तन करें, निरीक्षण करें और परीक्षण करें कि मुझ से कब-कहाँ और क्या-क्या भूलें हुई, मेरे में कितनी कमजोरियाँ हैं, मैं जीवन को कैसे सार्थक बनाऊँ?

पुत्र है तो वह सोचे कि पिता ने मुझे पढाया-लिखाया, होशियार बनाया, योग्य बनाया, शादी-विवाह किया अतः मैं पिता का ऋणी हूँ उस ऋण की मैं सेवा करके अदायगी करूँ।

भगवान महावीर ने माता-पिता का, अक्षर ज्ञान देने वाले गुरु का और धर्माचार्य का ऋण बहुत बड़ा ऋण कहा है। वह ऋण खिला-पिला देने से, सेवा कर देने से, जिन्दगी में जरूरत की चीजें मुहैया करा देने से पूरा नहीं होता, परन्तु धर्म में उनको सहयोग देकर उनसे उरुण हुआ जा सकता है। पुत्र अपनी आलोचना करे, पिता अपनी आलोचना करे।

तपस्या करने वाले तपस्वी सोचें कि मैंने जो तप किया है, वह स्वागत सत्कार और अभिनन्दन के लिए तो नहीं किया? मेरा तपस्वी के रूप में नाम आए इसलिए तो तप नहीं किया? तप क्यों करना? तप-दिवस पर मैं अपनी बात कह चुका हूँ।

शास्त्रवाणी कहती है- पाप अपनी आत्मा से और परमात्मा से छुपा नहीं रहता। आलोचना अपने-आपकी करनी है। दूसरों की आलोचना करना पाप है, निन्दा है, कर्मबंधन का कारण है। स्वयं की आलोचना करना शुद्धिकरण है, पश्चाताप है, स्वयं के किए गये पापों से निवृत्त होने का माध्यम है। आप जितना पश्चाताप करेंगे, उतने पाप हल्के होंगे। पाप करके बड़ाई करेंगे तो पाप बढ़ेगा और पुण्य करके प्रशंसा करोगे तो पुण्य घट जाएगा। एक ने दान दिया देने के बाद पश्चाताप आया कि मैंने क्यों सारा दान में दे दिया, कुछ रख लेता तो ठीक होता। उसने देने की जगह दिया

पर देकर मन में यह भाव आया कि क्यों मैंने सारा दे दिया? कुछ रख लेता तो अच्छा होता। देकर मन में मलाल रहेगा तो वह पाएगा जरूर, पर पाने के बाद भी खुद उसका भोग नहीं कर सकेगा।

पुण्य, प्रशंसा करने से घटता है, पाप प्रशंसा करने से बढ़ता है। पाप, पश्चाताप से घटता है। पुण्य भी प्रकट करने से कम होता है। आत्मशुद्धि के आज के दिन आप चिन्तन-मनन करें, आलोचना-प्रतिक्रमण करें और जाने-अनजाने जो भी भूलें हुई हैं उनका प्रायश्चित्त करें। आपने जो पाप किए हैं उन्हें भोगना आपको ही है। दूसरे माल तो खा लेंगे, मजे कर लेंगे, किन्तु पाप के फल को कोई दूसरा भोगने वाला नहीं है।

आप समाधि में रहना चाहते हैं, आत्मा को पवित्र करना चाहते हैं तो आप अपनी भूलें, चाहे कषायों से हुई हैं, चाहे विषयों से, चाहे मिथ्या अभिमान से हुई हैं, चाहे जाने-अनजाने में हुई हैं वे भूलें, भूले हैं उन्हें दूर करना होगा। चलते-चलते अचानक आँख में फूस पड़ सकता है, चलते-चलते पैर में काँटा लग सकता है। आपको आँख में पड़ा फूस और पैर में लगा काँटा निकालना पड़ेगा तभी आप ठीक तरीके से चल सकेंगे। इसी तरह अपनी भूलों को प्रायश्चित्त करके निकालना होगा, तभी आपका जीवन सुखी होगा।

पाप चाहे भूल से हुआ, जानकर हुआ, अनजाने में हुआ पाप, पाप है। पाप संताप देने वाला है। पाप दुःखी करने वाला है। आप पापों की आलोचना कर लें, थोड़े में छूट जाएँगे। नहीं तो पाप एक-न-एक दिन उदय में जरूर आयेंगे। आपने सुन रखा है निन्नाणु लाख भवों के बाद भी पाप उदय में आया। आत्मशुद्धि करें। आज के दिन को दिल की दिवाली भी कह सकते हैं। आत्मोत्थान के इस पर्व पर आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रायश्चित्त करेंगे तो सुख, शांति, आनन्द पा सकेंगे।

## कच्छर तपशील - सप्टेंबर २०२४

- ❖ भगवान महावीर को ध्यान से विचलीत करने के लिए संगमदेव द्वारा किया हुआ दारुण बीस उपसर्गः

कठिण कर्मों का क्षय करने के लिए भगवान महावीर ने म्लेच्छों से परिपूर्ण तथा साधु-सन्तों से सर्वथा अज्ञात ऐसी भूमि पसन्द की। तथा विहार करते हुए वे दृढ़भूमि के पोलास चैत्य में पहुँचे। वहाँ तीन दिन के निर्जल उपवास कर निर्जीव शिला पर कुछ अवनत शरीर से जिनमुद्रा-पूर्वक खड़े रहकर 'महाप्रतिमा' नामक तप स्वीकर किया। चित्त को स्थिरकर निर्निमेष दृष्टि से सारी रात एक अचित पुद्गल-स्कन्ध पर ही ध्यान स्थिर किया। महावीर के अडिग और दृढ़ ध्यान को इन्द्र ने ज्ञानद्वारा जानकर अपनी देव सभा में प्रशंसा करते हुए कहा कि - "ध्यान और धैर्य में भगवान की समानता कोई नहीं कर सकता है।

भगवान को अपने इस ध्यान से कोई चलित भी नहीं कर सकता है।" भगवान की इस प्रशंसा को तेजोद्वेषी सुराधम संगमदेव सहन नहीं कर सका। उसने कहा कि - "मनुष्य में ऐसा सामर्थ्य ही नहीं सकता है, इसे मैं प्रमाणित कर सकता हूँ।" और वह भगवान को ध्यान से विचलित करने के लिए शीघ्र ही दौड़ आया। उसने एक रात्रि में ही पिशाच, व्याघ्र, सर्प, बिच्छू आदि प्राणियों का उग्र उपद्रव, अप्सरा के हावभावपूर्वक विविध प्रलोभन कालचक्र प्रक्षेप आदि प्रतिकूल-अनुकूल कष्ट देनेवाले ऐसे बीस उपसर्ग किए, किन्तु धीर-वीर भगवान तनिक भी क्षुब्ध न हुए - सर्वथा निश्चल रहे और परीक्षा में पार उतरे। अन्त में संगमदेव सर्वथा हार मानकर वहाँ से चला गया।

- ❖ श्री उवसगहरं स्तोत्र सामुहिक पठण - पुणे  
बिबवेवाडी जैन स्थानकात २५ ऑगस्ट २०२४ रोजी महामंगलकारी श्री उवसगहरं

स्तोत्रचे सामुहिक पठणचे आयोजन शोभाजी रसिकलालजी धारिवाल, जान्हवीजी धारिवाल-बालन व पुनीत बालन यांच्या तर्फे करण्यात आले. (बातमी पान नं. १८५)

- ❖ गुरु आनंद पुरस्कार, पुणे  
आनंद दरबार कात्रज, पुणे तर्फे विविध क्षेत्रातील मान्यवरांचा राज्यस्तरीय गुरु आनंद पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले.  
(बातमी पान नं. १७९)
- ❖ श्री. प्रकाशजी धारिवाल - एस.एन.जे.बी. चांदवड, सहयोग  
दानवीर श्रीमान प्रकाशजी रसिकलालजी धारिवाल (भामाशाह) यांच्या तर्फे श्री नेमीनाथ जैन ब्रम्हचार्य (जैन गुरुकुल), चांदवड (नाशिक) संस्थेत भरीव आर्थिक सहयोग देण्यात आले.  
(बातमी पान नं. १७७)
- ❖ गांधी ज्वेलर्स, लक्ष्मी रोड, पुणे  
गांधी ज्वेलर्स, लक्ष्मी रोड, पुणे येथे ११००० चौरस फुटांचे चार मजली भव्य दालनचे उद्घाटन ४ ऑक्टोबर २०२४ रोजी होत आहे. गांधी ज्वेलर्सचे संचालक श्री. प्रकाशजी हुकुमचंदजी गांधी व श्री. आशिष प्रकाशजी गांधी यांनी या उद्घाटनास सर्वांनी यावे ही विनंती केली आहे.  
(लेख पान नं. ६७)
- ❖ "कॅमल साबुदाना" ब्रँड - अहमदनगर  
अहमदनगर येथील सुप्रसिद्ध कॅमल साबुदाना हा ब्रँड महाराष्ट्राचा एफएमजीसीजी विश्वसनीय ब्रँड म्हणून दिल्ली येथे सन्मानित करण्यात आला.  
(बातमी पान नं. १७४)
- ❖ C.A. मे. पी.एस. बाफना आणि कंपनी - पुणे  
पुणे येथील चार्टर्ड अकाउंटेंट मे. पी.एस. बाफना आणि कंपनी मधील विद्यार्थ्यांची परीक्षेत उत्तुंग भरारी घेतल्याबद्दल त्यांच्या सत्कार सोहळ्याच आयोजन करण्यात आले. (बातमी पान नं. १८१) ●